152
607 P
M
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1193/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 607

Prabhat Pheri Gayan va Nare
Commr. Ajmer-Merwara
in Hindi

✽ जय• मरुधरा ✽

प्रभात फेरी गायन

व

नारे

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
Regr. No
7 - OCT. 1941

607

सम्वत् १९९८

Register No. 6
Quarter ending 30·6·41
Date of receipt 21·4·41

प्रथमवार ५००

मूल्य
)॥ दो पैसे

प्रकाशक
मन्त्री
नगर लोकपरिषद, फलोदी

Prabhat Pheri Gayan
Censor : Ajmer
59
F 183 P
891.43
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 607
Date 15.12.71
GOVT. OF INDIA

दो शब्द

नगर लोक-परिषद् फलोदी की ओर से पिछले डेढ़ मास से नित्यप्रति प्रभात फेरी निकाली जा रही है, जिस में राष्ट्रीय गीत व नारे काम में लाये जाते हैं। आज हमें उन्हीं नारों व गीतों को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने की आवश्यकता हुई है इसके दो कारण हैं। प्रभात फेरी के कारण लोक परिषद् की लोकप्रियता बढ़ रही है और बहुत से लोग इन गायनों की मांग करने लगे हैं। मगर दूसरा कारण कुछ गम्भीर अधिक है। इसी फरवरी में श्री दरबार साहब आखेट (शिकार) के लियें फलोदी-पधारे थे। लोकपरिषद् के लिये तो प्रभात फेरी निकालना नित्यप्रति का नियम था, तदर्थ उन दिनों भी निकाली गई। इस पर स्थानीय पुलिस अधिकारी ने एक झूठी रिपोर्ट भेजी, जिसमें चीफ मिनिस्टर विरोधी नारे लगाये जाने का हम पर आरोप था। उस रिपोर्ट का क्या हाल हुआ इसका हमको इल्म नहीं। उसके कुछ ही दिनों बाद उस पुलिस अधिकारी की तरक्की होगई। इस सम्बन्ध में यह भी कहना अनुचित न होगा कि उन पुलिस अधिकारी और लोक परिषद् के सम्बन्ध पिछले बहुत दिनों से जब कि वे बाली में नियुक्त थे बिगड़े हुए हैं।

जोधपुर सरकार के प्रधान मन्त्री महोदय को हम अर्ज करना चाहते हैं कि उक्त पुलिस अधिकारी की रिपोर्ट की सच्चाई जानने के लिये एक जांच कमेटी नियुक्त करें और पब्लिक के अलावा पुलिस इत्यादि से भी दर्याफ्त करावें और हमें विश्वास है कि सहज से यह मालूम हो जायगा कि एक पुलिस थानेदार किस हद तक झूठी कार्वाई कर देत है।

जनता में लोक परिषद् के प्रति कोई गलत फहमी न फैले इस लिये हम उन गायनों एवं नारों को एक साथ प्रकाशित करते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि इन के अलावा प्रभात फेरी में कोई नारे अभी तक तो काम में नहीं लाये गये।

यहाँ पर यह भी बतलाना अनुचित न होगा कि लोक परिषद् की ओर से सिर्फ ५ बजे सुबह से ६॥ बजे सुबह तक प्रभात फेरी निकलती है। इस के सिवा दीगर प्रदर्शन का लोक परिषद् कतई जिम्मेवार नहीं है।

निवेदक

मन्त्री—

नगर लोक-परिषद् फलौदी

झण्डा-गायन

(१)

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। झण्डा ऊंचा रहे हमारा ॥
सदा शक्ति बरसाने वाला,
प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हरसाने वाला,
मातृभूमि का तन मन सारा ॥ झण्डा०
स्वतन्त्रता के भीषण रण में,
लखकर जोश बढ़े क्षण क्षण में।
कांपें शत्रु देख कर मन में,
मिट जावे भय, संकट सारा ॥ झण्डा०
इस झण्डे के नीचे निर्भय,
लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय,
स्वतन्त्रता है ध्येय हमारा ॥ झण्डा०
आओ प्यारे वीरो आओ,
देश धर्म पर बलि बलिजाओ।
एक साथ सब मिलकर गाओ,
प्यारा भारत देश हमारा ॥ झण्डा०
इस की शान न जाने पावे,
चाहे जान भले ही जावे।
सकल विश्व में यह फहरावे,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥ झण्डा०

(संग्रहित)

हमारी प्रतिज्ञा

(२)

आराम तभी हम लेंगे जब पायेंगे आजादी ॥

कस कर काम रात दिन करते, वे किसान नित भूखों मरते ।
भूल नहीं जावेंगे इन लोगों की बरबादी ॥ आराम तभी ॥१॥

बजा हथोड़े बहा पसीना, काम करें पर मुश्किल जीना ।
इनकी कड़ी कमाई लाचारी ने लुटवादी ॥ आराम तभी ॥२॥

इधर जहाँ देखो बेकारी, उधर उड़ाते तनख्वा भारी ।
हमने दौलत सारी, ग़ैरों के पांव चढ़ादी ॥ आराम तभी ॥३॥

सभी हिन्द वासी अब मिल कर, कायम करें हकूमत बेहतर ।
सारी जिम्मेदारी अपने ही सिर हो लादी ॥ आराम तभी ॥४॥

जब तक देश गुलाम रहेगा, तब तक ये ही काम रहेगा ।
हम ने अपनी हस्ती माता के लिये मिटादी ॥ आराम तभी ॥५॥

याद शहीदों की नित करना, जिन ने सिखलाया है मरना ।
हँस हँस मां की खातिर है अपनी जान गँवादी ॥ आरम तभी ॥६॥

गाओ सब मिल कर यह गाओ, माता का दुख दर्द मिटाओ ।
अपनी बरबादी में, हो भारत की आबादी ॥ आराम तभी ॥७॥

(संग्रहित)

मरुधर के लाल

(३)

मरुधर में ऐसे लाल रहें।—
लेखा करते बेकारों का,
सुधि लेते मरुधर भैयों की।
उत्तरदायी शासन के लिये,
जीवन के कण कण देते रहें॥ मरुधर में॥ १॥

मरुभूमि का नाम प्रकाश करें,
त्यागी बेटे गट्टानी जी।
जय नारायण और माथुर जी,
अचलेश्वर नाद बजाय रहे॥ मरुधर में॥ २॥

होवे ऐसी शासन सुविधा,
बेकारी का नाम निशान मिटे।
चल जावे ऐसी सुचारु लहर,
रिश्वत खोरी का नाश रहे॥ मरुधर में॥ ३॥

राजा व प्रजा में प्रेम रहे,
दुखियों के दुःख को दूर करें।
परिषद् की प्यारी बहार रहे,
'सर्वेश' शान्ति का राज रहे॥ मरुधर में॥ ४॥

(श्री गोपीकृष्ण पुरोहित, 'सर्वेश')

अरटियो (मारवाड़ी में)

(४)

हांरे मांडो अरटियो सिखावण साची रे मांडो अरटियो ॥टेर
पाछा मांडो अरटियों क्यूं खूंटी ऊपर धरियोरे।
अरटियो तो देश रो उपकार करियोरे ॥ मांडो अरटियो ॥ १ ॥

ठाला बैठा मानवियों ने ऊन्दाक ाम सूझे रे।
काम रा करतोड़ा ज्याने लोग बूझे रे ॥ मांडो अरटियो ॥ २ ॥

सात महीना करसा सारा निकमा बैठा रेवे रे।
साठ करोड रो घाटो बरसा बरसी सेवे रे ॥ मांडो अर० ॥ ३ ॥

धीरज राखो देश सुधारो, अंग पर खादीधारो रे।
बालो लागे अरटियो आंखोंरो तारो रे ॥ मांडो अरटियो ॥ ३ ॥

हुँकार

(५)

जवानो उठो उठो तत्काल,
न झुकने देना भारत भाल ॥ टेर ॥
देश में इतनी है हल चल ,
पहनते फिर भी तुम मल मल।
कहा तुम्हें अमूल्य पल पल,
कहो तुम खोद रहे दल दल ॥

पहनना मत परदेशी माल,
न झुकने देना भारत भाल ॥ १ ॥

गुलामी आजादी को तोल,
बताओ किस को लोगे मोल।
देखना अपना हृदय टटोल,
न जाना अपने व्रत से डोल ॥
बोलना अपने होश सँभाल,
न झुकने देना भारत भाल ॥ २ ॥

हमारा शान्त सत्य संग्राम,
न इस में हिंसा का कुछ काम।
यदि चाहते हो तुम अपना नाम,
तो चलो, न बस अबलो विश्राम ॥
खडा है सिर पर काल कराल,
न झुकने देना भारत भाल ॥ ३ ॥

जहाँ पर चले तीर तलवार,
वहाँ चुप सहते जाना वार।
न हटना पीछे हिम्मत हार,
वहीं देना तन, मन, धन वार ॥
जीत कर लाना विजय विशाल,
न झुकने देना भारत भाल ॥ ४ ॥

(श्री करटक)

उठो जवानो

(५)

उठो नौजवानो न रहने कसर दो,
विदेशी का अबतो बहिष्कार करदो ॥

मुअस्सर जहाँ नहीं पेट भर है दाना,
गुलामी में मुश्किल हुआ सर उठाना।

मँगा कर विदेशी वहाँ धन लुटाना,
तुम्हें चाहिये दिल में कुछ शर्म खाना ॥

मिटा देश जाता है इसकी खबर लो,
विदेशी का अब तो बहिष्कार करदो ॥ १ ॥

बहुत सो चुके और लम्बी न तानो,
न यों देश के खूं में हाथ अपने सानो।

बहुत कर लिये पाप अब मानो,
चलो देश का उत्थान आप ठानो।

स्वदेशी से भारतका भण्डार भरदो,
विदेशी का अब तो बहिष्कार करदो ॥ २ ॥

झण्डा-प्रण

(६)

प्राण मित्रो भले ही गँवाना ।
पर न झण्डा यह नीचा गिराना ॥

तीन रंगा है झण्डा हमारा,
बीच चर्खा चमकता सितारा ।
शान है यह इज्जत हमारी,
सिर झुकाती इसे कौम सारी ।

तुम भी सब कुछ खुशी से चढ़ाना ।
पर न झण्डा यह नीचे झुकाना ॥ १ ॥

यह है आज़ादपन की निशानी,
इसके पीछे हैं लाखों कहानी ।
जिन्दा दिल ही हैं इसको उठाते,
मर्द हैं इस पै सिर तक कटाते ।

तुम भी सारी मुसीबत उठाना ।
पर न झण्डा यह नीचा झुकाना ॥ २ ॥

अरे क्या भूले हो जलियाँ वाला,
या वह डायर का इतिहास काला ।
गोलियों की लगी जब झड़ी थी,
नींव आजादी की तब पड़ी थी ।

याद जो हो वह खूं में नहाना।
तो न झण्डा यह नीचे झुकाना॥ ३॥

उसने तो था न क्या जुल्म ढाया,
पेट के बल पै हम को चलाया।
कोसों बच्चों को पैदल भगाया,
माँ बहिनों को घर घर रुलाया।

याद गर तुम्हें हो वह फिसाना।
तो न झण्डा यह नीचा झुकाना॥ ४॥

और अब भी न क्या हो रहा है,
कौन सुख नींद में सो रहा है।
लाखों पाते न भर पेट खाना,
सच्च बोलो तो है जेलखाना।

है इसी से छिड़ा यह तराना।
होना आजाद या मर मिट जाना॥ ५॥

पर करलो यह अहद मर मिटेंगे,
पर न वृत से तिल भर हटेंगे।
कुछ भी हो मुल्क आजाद होगा,
उजड़ा गुलशन फिर आबाद होगा।

गायेंगे सब मिल यह गाना॥
हिन्द होगा न अब जेलखाना॥ ७॥

झण्डा यह हर किले पर चढ़ेगा,
इस का बल दूना रोज बढ़ेगा।
तीर तलवार बेकार होंगे,
सोने वाले भी बेदार होंगे।
गायेंगे आज सब मिल यह गाना।
पर न झण्डा यह नीचे झुकाना॥ ७॥

(र० श्री० विजयसिंह पथिक)

क्रान्ति मचावेंगे

(६)

घर घर में क्रान्ति मचावेंगे।
भारत स्वाधीन बनावेंगे॥
देखो माँ का आव्हान हुआ।
आजादी का सामान हुआ॥
वेदी पर यज्ञ विधान हुआ।
फिर मुर्दा जोश जवान हुआ॥
मचला है मन मिट जावेंगे।
भारत स्वाधीन बनावेंगे॥

नारे

(८)

वन्दे—मातरम्
इन्किलाब—जिन्दावाद
लोकपरिषद्—जिन्दावाद
साम्राज्य वाद का—नाश हो
भारत—आजाद हो
नौकरशाही के अत्याचारों का—नाश हो
जिम्मेदार हकूमत—कायम हो
मरुधराधीश की—जय

मुद्रक
ऋषिदत्त मेहता
राजस्थान प्रेस, अजमेर